



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दूर-भाग	16.10.22	10	2-8

नवीनतम सिफारिशों को किसानों तक शीघ्र पहुंचाना जरूरी: प्रो. काम्बोज

चने की 4 समेत 8 नए किस्मों की सिफारिशें

दो दिवसीय कार्यशाला में वैज्ञानिकों ने प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ मंथन किया।

दिग्गज न्यूज ११ हिंसा



हिंसा। कार्यशाला को संबोधित करते मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रशूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। दक्षिण-पश्चिम

हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में जो की बिजाई अक्टूबर के आखिरी व नवम्बर के पहले सप्ताह के बीच करना, ढाना मटर में निम्न सल्फर स्तर वाली जमीन में 12 कि.ग्रा. सल्फर प्रति एकड़ एवं निम्न व

उर्वरकों के अत्याधिक प्रयोग को रोकना अत्यंत आवश्यक

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महाविदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलना व उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक। उन्होंने कहा कि खाद की कमी नहीं है बल्कि उसका वितरण सही तरीके से करने की जरूरत है। उन्होंने पराली प्रबंधन, रबी फसलों की समय सिफारिशें व नवीनतम

तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व आगामी रबी सीजन में उर्वरक की उपलब्धता और वितरण को सही तरीके से करवाने के बारे में सभी कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवंत सिंह मंडल ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया और कार्यशाला के बोर्ड ऑफिसर डॉ. हवा सिंह सहारण ने उपस्थित सभी का धन्यवाद किया।

मध्यम पौटाश वाली जमीन में 8 कि.ग्रा. पौटाश प्रति एकड़ की दर से बिजाई के समय डालना, टिकाऊ खेतों के लिए ज्वार-बरसीम फसल चक्र में जैविक चारा उत्पादन तथा गेहू के पीला रतुआ के नियंत्रण के लिए 120 ग्रा. नैटिवो प्रति एकड़ स्प्रे करना भी नई समय सिफारिशों में शामिल है।

पराली प्रबंधन पर चर्चा

मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों

को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पराली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पञ्जाब मेसरी	16.10.22	2	5-8

नवीनतम सिफारिशों व कृषि तकनीकों को किसानों तक शीघ्र पहुंचाना जरूरी : प्रो. काम्बोज

■ वैज्ञानिकों ने प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ किया मथन

हिसार, 15 अक्टूबर (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आरंभ हुई 2 दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई, जिसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार-विमर्श किया गया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया।

इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पराली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की।



कार्यशाला को संबोधित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

कार्यशाला में नई किस्मों की सिफारिश की

कार्यशाला में अनुमोदित की गई 8 नई सिफारिशों में 4 नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एच.सी.-6), जई की एच.एफ.ओ.-611 एवं एच.एफ.ओ.-707 तथा चंद्रशूर की एच.एल.एस.-4 को शामिल किया गया है।

इसके अलावा दक्षिण-पश्चिम हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में जौ की बिजाई अक्टूबर के आखिरी सप्ताह से नवम्बर के पहले सप्ताह के बीच करना, दाना मटर में निम्न सल्फर स्तर वाली जमीन में 12 कि.ग्रा. सल्फर प्रति एकड़ एवं निम्न व मध्यम पीटाश वाली जमीन में 8 कि.ग्रा. पीटाश प्रति एकड़ की दर से बिजाई के समय डालना, टिकाक रोगों के लिए ज्वार-बरसीम फसल चक्र में जैविक चास उत्पादन तथा गेहूँ के पीला रतुआ के नियंत्रण के लिए 120 ग्रा. नेटिवो प्रति एकड़ स्प्रे करना भी नई समग्र सिफारिशों में शामिल है।

फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग को रोकना आवश्यक : डॉ. हरदीप

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक। उन्होंने कहा कि खाद को कमो नहीं है, बल्कि उसका वितरण सही तरीके से करने को जरूरत है।

उन्होंने पराली प्रबंधन, रबी फसलों की समग्र सिफारिशों व नवीनतम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व आगामी रबी सीजन में उर्वरक की उपलब्धता और वितरण को सही तरीके से करवाने के बारे में सभी कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषक हितैषी स्कीमों के बारे में विस्तार से बताया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	16.10.22	4	5-8

कार्यशाला

एचएयू में जुटे प्रदेशभर के वैज्ञानिक और कृषि अधिकारी

आठ नई सिफारिशों में चने की चार नई किस्में

अमर उजाला ब्यूरो

कृषि संबंधी समस्याएँ व वैज्ञानिक उसी के अनुरूप करें शोध : कुलपति

हिसार। चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में दो दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों और वैज्ञानिकों ने रबी फसलों की बिजाई पर परिचर्चा की। एचएयू के कुलपति ने अफसरों को कृषि संबंधी समस्याएँ वैज्ञानिकों को बताने और वैज्ञानिकों से उसी अनुरूप शोध करने पर जोर दिया।

उन्होंने कार्यशाला में अनुमोदित की आठ नई सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रशूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। समापन कार्यक्रम के मुख्य



हिसार। एचएयू में कृषि अधिकारियों के दो दिवसीय गोष्ठी के समापन अवसर पर मंचासीन अतिथिगण। संवाद

अतिथि व एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों का आह्वान करते कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की नई शोध की गई विधियों, बीजों व तकनीकियों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि

वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पराली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की। कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का

भला हो सकता है। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया और कार्यशाला के नोडल ऑफिसर डॉ. हवा सिंह सहाय ने उपस्थित सभी का धन्यवाद किया। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक है।

समारोह के आखिरी दिन महानिदेशक ने कृषि विभाग के अफसरों को सचेत करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की अगली किस्त जल्दी ही वंटने वाली है। इससे पहले लाभ पाने वाले किसानों का पूरा विवरण दुहरस कर लें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अज्ञात समाचार	16.10.22	10	6-8

नवीनतम सिफारिशों व कृषि तकनीकों को किसानों तक शीघ्र पहुंचाना जरूरी : प्रो. काम्बोज

हिसार, 15 अक्टूबर (विरेद वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आरंभ हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई, जिसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकों की पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पराली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की।

उन्होंने बताया कि कार्यशाला में अनुमोदित की गई आठ नई सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई



मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए

की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रशूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। इसके अलावा दक्षिण-पश्चिम हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में जौ की बिजई अक्टूबर के आखिरी सप्ताह से नवम्बर के पहले सप्ताह के बीच करना, दाना मटर में निम्न सल्फर स्तर वाली जमीन में 12 कि.ग्रा. सल्फर प्रति एकड़ एवं निम्न व मध्यम पौटाश वाली जमीन में 8 कि.ग्रा. पौटाश प्रति एकड़ की दर से बिजई के समय डालना, टिकाऊ खेती के लिए ज्वार-बरसीम फसल चक्र में जैविक चारा उत्पादन तथा गेहूँ के पीला रतुआ के नियंत्रण के लिए 120 ग्रा. नैटिवो प्रति एकड़ स्प्रे करना भी नई समग्र सिफारिशों में शामिल है।

फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों के अत्याधिक प्रयोग को रोकना अत्यंत

आवश्यक : डॉ. हरदीप सिंह

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्याधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि खाद की कमी नहीं है बल्कि उसका वितरण सही तरीके से करने की जरूरत है। उन्होंने पराली प्रबंधन, रबी फसलों की समग्र सिफारिशों व नवीनतम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व आगामी रबी सीजन में उर्वरक की उपलब्धता और वितरण को सही तरीके से करवाने के बारे में सभी कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषक हितोपी स्कीमों के बारे में विस्तार से बताया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहें	16.10.22	5	1

कृषि अधिकारियों संग वैज्ञानिकों ने किया मंथन

हिसार (सच कहें न्यूज़)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आरंभ हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई जिसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. कम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पराली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कार्यशाला में अनुमोदित की गई आठ नई सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रशूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। इसके अलावा दक्षिण-पश्चिम हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में जौ की बिजाई अक्तूबर के आखिरी सप्ताह से नवम्बर के पहले सप्ताह के बीच करना, दाना मटर में निम्न सल्फर स्तर वाली जमीन में 12 कि.ग्रा. सल्फर प्रति एकड़ एवं निम्न व मध्यम पीटाश वाली जमीन में 8 कि.ग्रा. पीटाश प्रति एकड़ की दर से बिजाई के समय डालना, टिकाऊ खेती के लिए ज्वार-बरसीम फसल चक्र में जैविक चारा उत्पादन तथा गेहू के पीला रतुआ के नियंत्रण के लिए 120 ग्रा. नेटिवो प्रति एकड़ स्प्रे करना भी नई समग्र सिफारिशों में शामिल है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	16.10.22	2	5-6

विज्ञानियों ने रबी फसलों की समग्र सिफारिशों पर की चर्चा

जामरुण संवाददाता, हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई। कार्यशाला में विज्ञानियों ने रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में चर्चा की। कार्यशाला में अनुमोदित की गई आठ नई सिफारिशों में चार नई किस्में हैं। जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रशूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। इसके अलावा दक्षिण-पश्चिम हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में जौ की बिजाई अक्टूबर के आखिरी सप्ताह से नवम्बर के पहले सप्ताह के बीच करना, दाना मटर में निम्न सल्फर स्तर वाली जमीन में 12 किलो ग्राम सल्फर प्रति एकड़ एवं निम्न व मध्यम पोटाश वाली जमीन में 8 किलोग्राम पोटाश प्रति एकड़ की दर से बिजाई के समय डालना, टिफाऊ खेती के लिए ज्वार-बरसीम फसल चक्र में जैविक चारा उत्पादन तथा गेहूँ के पीला रतुआ के नियंत्रण के लिए 120 ग्राम नैटवो प्रति एकड़ स्प्रे करना भी नई समग्र सिफारिशों में शामिल है। मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। डा. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल के अवशेष को जलाने से रोकना जरूरी है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	16.10.22	2	4-5

कृषि तकनीकों को किसानों तक पहुंचाना जरूरी : वीसी

भास्कर न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आरंभ हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई जिसमें प्रदेश भर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई।

इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई गई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पराली प्रबंधन

के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कार्यशाला में अनुमोदित की गई आठ नई सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रशूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया और कार्यशाला के नोडल ऑफिसर डॉ. हवा सिंह सहारण ने उपस्थित सभी का धन्यवाद किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
डॉ। ज. समाज	16.10.2022	-----	-----

नवीनतम सिफारिशों व कृषि तकनीकों को किसानों तक शीघ्र पहुंचाना जरूरी: प्रो. बी.आर. काम्बोज

■ वैज्ञानिकों ने प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ किया मंथन

प्रवीन कुमार

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आज हुए दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यालय सत्रण हुए जिसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यालय में रही कानूनी की सलाह सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकों पर चर्चा पर विचार विमर्श किया गया।

इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यालय में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आग्रह किया कि लोग को नई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की पुनः लगावों को ध्यान



में रोजगार सौध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने सरकारी प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही सौध के विकास कार्य पर चर्चा की।

उन्होंने बताया कि कार्यालय में अनुपस्थित की गईं जगत नई सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चन्ड-6 (एकरी-6), जई की

एकरकज-611 एवं एकरकज-707 तथा पंजाब की एकरकज-4 को शामिल किया गया है। इसके अलावा दुधिया-पंजाब हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों में जो की किवाई अनुसंधान के अधिकारी सहाय से मजबूत के पहले समय के बीच काम, चार मटर में किन्न मालूम कर जाती जमीन में 12

कि.हा. कालम प्रति एकड़ एवं किन्न व मजबूत पैदाश वाली जमीन में 8 कि.हा. पैदाश प्रति एकड़ की दर से किवाई के समय डालना, शिक्षाज क्षेत्रों के लिए जवा-बरासीय फसल चक्र में वैश्विक पाठ उपलब्ध तथा मेटू के पीछे लुआ के निर्माण के लिए 120 हा. मैटोवें प्रति एकड़ से करण भी नई

फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों के अत्याधिक प्रयोग को रोकना अत्यंत आवश्यक: डॉ. हरदीप सिंह

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के सचिव/संचालक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि खेत की कमी नहीं है बल्कि उचित विचारण नहीं लौकिक नई कानूनी की जरूरत है। उन्होंने सरकारी प्रबंधन, रही कानूनी की सलाह विश्वविद्यालय व नवीनतम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व आगामी नवी सौधन व उर्वरक की उपलब्धता और विद्युत की गहरी लौकिक नई कानूनी के बारे में सभी कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषक क्रेडिट नईयों के बारे में विस्तार से बताया। विस्तार शिक्षा विभाग डॉ. काम्बोज सिंह मंडल ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का आग्रह किया और कार्यालय के नवीन अधिकार डॉ. इला सिंह साहल ने उपस्थित सभी का सन्देश दिया।

समय सिफारिशों में शामिल है।

उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के अग्रण के सलमेल से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यालय अर्थात्

को जाती है जिसमें किसान के सौध व नई फसल के समायोजन के लिए कृषि अधिकारी अपनी साथ वैज्ञानिकों के साथ सलमेल करते हैं तथा वैज्ञानिक इन सलमेलों के अनुसंधान ही अपनी सौध कार्य पलन कार्य करते हैं लौकिक नई सलमेल सौधन न आर व किसान को आगामी को।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बीजे	15.10.2022	-----	-----

नवीनतम कृषि तकनीकों को किसानों तक शीघ्र पहुंचाना जरूरी: प्रो. काम्बोज

पांच बीजे स्पेशल

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित हुए दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई जिसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रही फसलों की समस्त विधियों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकों पर विचार विमर्श किया गया।

इस अवसर पर मुख्यालय विस्तार विभाग के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आग्रह किया कि शीघ्र की गई नई विधियों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने पहाड़ी प्रबंधन के लिए विस्तार विभाग द्वारा की जा रही शोध के



विकास कार्य पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कार्यशाला में अनुसंधान की गई आठ नई विधियों में चार नई किस्में, जिसमें दोसे घने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंडनूर की एचएलएम-4 को शामिल किया गया है। इसके अलावा दधिम-परिचम

हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों में जो की बिजली अभाव के अतिरिक्त समग्र से नवम्बर के पहले मसाल के बीज बनाने, टाउन मटर में निम्न साधन प्राप्त वाली जर्मेन में 12 कि.घा. सल्फर प्रति एकड़ एवं निम्न व मध्यम पैदाश वाली जर्मेन में 8 कि.घा. पैदाश प्रति एकड़ की दर से बिजली के समग्र

आवक, टिकाऊ खेती के लिए जल-आरोप फसल चक्र में वैशिक चक्र उत्पादन तथा गेहूँ के पीला रोग के निरोधन के लिए 120 घा. नैटिमे प्रति एकड़ से करना भी नई समग्र विधियों में शामिल है।

उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के अक्सर के सम्मेलन से ही किसान का ध्यान हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई समस्या के समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी खास वैज्ञानिकों के पास लेकर जाते हैं तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुभव से अपनी शोध कार्य प्रस्तुत करते चलाते हैं जो कि वे समस्या सेबाध न आए व किसान को असहज न हों।

फसल अवरोध जलवायु व उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग को रोकना आंधे

आवश्यक: डॉ. हरदीप सिंह

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महादेशिक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवरोध जलवायु व उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग किसान अत्यंत असहजक। उन्होंने कहा कि खेत की कमी नहीं है परंतु इसका किसान सही तरीके से करने की जरूरत है। उन्होंने पहाड़ी प्रबंधन, राई फसलों की समग्र विधियों व नवीनतम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व अत्याधिक रबी सीजन में उर्वरक को उपलब्ध और विचार को सही तरीके से करवाने के बारे में सभी कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषक विनिर्देश कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से बताया। विस्तार विभाग महादेशिक डॉ. कल्याण सिंह पंडित ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया और कार्यशाला के महत्व अधिकार डॉ. हाव सिंह साहय ने इतिवृत्त सभी का धन्यवाद किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पत्र	15.10.2022	-----	-----

नवीनतम सिफारिशों व कृषि तकनीकों को किसानों तक शीघ्र पहुंचाना जरूरी: प्रो. बी.आर. काम्बोज

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आरंभ हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला, वैज्ञानिकों ने प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ किया मंथन

सिटी पत्र न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आरंभ हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला सफल हुई जिसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में सभी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकों पर विचार विमर्श किया गया।

इस अवसर पर मुख्यअतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उद्बोध कृषि अधिकारियों से उद्घोषित किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पत्तली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय



मुख्यअतिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

द्वारा की जा रही शोध के फलस्वरूप कार्यों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कार्यशाला में अनुसंधित की गई अद्यतन सिफारिशों में चार नई किराने, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएचसी-611 एवं एचएचसी-707 तथा चंडेश्वर की एचएचसी-4 को शामिल

किया गया है। इसके अलावा उदित-पश्चिम हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में जौ की सिफारिश अक्षर के अतिरिक्त सतलुज में मजमूर के पहले बांदा के बीच करना, दान मटर में निम्न घासपत्त, रत्ता खारी जमीन में 12 कि.घा. सल्फर प्रति एकड़ एवं मिमू व सलम पौटाता खाली जमीन में 8 कि.घा. पौटाता प्रति एकड़

की दर से सिफारिश के साथ डालफ, टिकाऊ खेती के लिए ज्वार-बाजरीय फसल चक्र में वैश्विक चारा उत्पादन तथा गेहू के पीना रतुआ के नियंत्रण के लिए 120 घा. मैटिले प्रति एकड़ को करना भी नई समग्र सिफारिशों में शामिल है। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के अक्सर के सम्पर्क से ही किसान को भला हो सकता है। हरियाणा एक पैरा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें विज्ञान के क्षेत्र में अद्यतनता के समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी बात वैज्ञानिकों के पास लेकर जाते हैं तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुक्रम ही अपनी शोध कार्य प्लान करके चलते हैं तबिये व सफल होता है न अर्थ व किसान को अन्नदाने को।

फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों के अत्याधिक प्रयोग को रोकना अत्यंत आवश्यक: डॉ. हरदीप सिंह

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग रोकना अत्यांत आवश्यक। उन्होंने कहा कि खाद की कमी नहीं है बल्कि उसका विवरण सही तरीके से करने की जरूरत है। उन्होंने पत्तली प्रबंधन, रबी फसलों की समग्र सिफारिशों व नवीनतम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व आगामी रबी सीजन

में उर्वरक की उपलब्धता और वितरण को सही तरीके से करवाने के बारे में सभी कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषक शिपों स्कीमों के बारे में विस्तार से बताया। हिसार रिला निदेशक डॉ. चरणवन्त सिंह मोहन ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया और कार्यशाला के नेटवर्क अतिथिमा डॉ. हरा सिंह मोहन ने उद्बोध सभी का कल्याण किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
निराग 23 मंस	15.10.2022	-----	-----

कृषि तकनीकों को किसानों तक शीघ्र पहुंचाना जरूरी : प्रो. काम्बोज



चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आरंभ हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न हुई जिसमें प्रदेश भर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकों पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।

इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने परगली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्यों पर चर्चा

की। उन्होंने बताया कि कार्यशाला में अनुमोदित की गई अठारह नई सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चना-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा चंद्रशूर की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है। इसके अलावा दक्षिण-पश्चिम हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में जौ की बिजाई अक्तूबर के आखिरी सप्ताह से नवम्बर के पहले सप्ताह के बीच करना, घाना मटर में निम्न सल्फर स्तर वाली जमीन में 12 कि.ग्रा. सल्फर प्रति एकड़ एवं निम्न व मध्यम पीटाश वाली जमीन में 8 कि.ग्रा. पीटाश प्रति एकड़ की दर से बिजाई के समय छलना, टिकाक छोटी के लिए ज्वार-बरसीम फसल चक्र में जैविक खाद उत्पादन तथा गेंहू के पीला रतुआ के निबंधन के लिए 120 ग्रा. नैटिको प्रति एकड़ छरे करना भी नई समग्र सिफारिशों में शामिल है।

उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई समस्या के समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी बात वैज्ञानिकों के

उर्वरकों के अत्याधिक प्रयोग को रोकना बहुत जरूरी : डॉ. हरदीप सिंह

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. हरदीप सिंह ने कहा कि फसल अवशोषण जलाना व उर्वरकों का अत्याधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि खाद की कमी नहीं है बल्कि उसका वितरण सही तरीके से करने की जरूरत है। उन्होंने परगली प्रबंधन, रबी फसलों की समग्र सिफारिशों व नवीनतम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व आगामी रबी सीजन में उर्वरक की उपलब्धता और वितरण को सही तरीके से करवाने के बारे में सभी कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए। निम्न शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने सभी अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया और कार्यशाला के नोडल ऑफिसर डॉ. हया सिंह सहायण ने उपस्थित सभी का धन्यवाद किया। पास लेकर जाते हैं तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुरूप ही अपनी शोध कार्य प्लान करके चलते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
15-10 स्थान समाचार	15.10.2022	-----	-----

| हिंसार: कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के तालमेल से ही किसानों का भला संभव: कम्बोज

15 Oct 2022 19:56:51



सर्वोत्तम सिफारिशों व कृषि तकनीकों को किसानों तक शीघ्र पहुंचाना जरूरी

वैज्ञानिकों से प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ किया संघर्ष

हिंसार, 15 अक्टूबर (दि.स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.आर. कम्बोज ने कहा है कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई समस्या के समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी बात वैज्ञानिकों के पास लेकर जाते हैं तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुकूल ही अपनी शोध कार्य प्रस्तुत करके चलते हैं ताकि ये समस्या दोबारा न आए व किसान की आमदनी बढ़े।

कुलपति बी.आर. कम्बोज शनिवार को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में हुई दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला के समापन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इसमें प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। उन्होंने कृषि अधिकारियों से आग्रह किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को पचान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने पनाली प्रबंधन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही शोध के विकास कार्य पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कार्यशाला में अनुमोदित की गई आठ नई सिफारिशों में चार नई किस्में, जिसमें देसी चने की हरियाणा चला-6 (एचसी-6), जई की एचएफओ-611 एवं एचएफओ-707 तथा घेंटशूट की एचएलएस-4 को शामिल किया गया है।

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महासिद्धिक डॉ. इरहीप सिंह ने कहा कि फसल अवशेष जलाना व उर्वरकों का अत्याधिक प्रयोग रोकना अत्यंत आवश्यक। उन्होंने कहा कि खाद की कमी नहीं है बल्कि उसका वितरण सही तरीके से करने की जरूरत है। उन्होंने पनाली प्रबंधन, रबी फसलों की समग्र सिफारिशों व सर्वोत्तम तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने व आगामी रबी सीजन में उर्वरक की उपलब्धता और वितरण को सही तरीके से करवाने के बारे में सभी कृषि अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषक हितेषी स्कीमों के बारे में विस्तार से बताया। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह ने सभी कृषि अधिकारियों व वैज्ञानिकों का स्वागत किया और कार्यशाला के तीसरे अधिवक्ता डॉ. इवा सिंह सहारण ने सभी का आभार व्यक्त किया।



16 Oct 2022

हरियाणा के सभी

प्रदेश में 18 को प्रदा
पलिया कर्मी पट्टी



16 Oct 2022

नारी शक्ति पुरस्

8 नवंबर, 2022 को 7
पट्टी, 16 अक्टूबर



16 Oct 2022

कैथल: पंचायत

कैथल बंड में खसले
संवेदनशील न्योडन



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उमर उजाला	17/10/22	2	7-8



कृषि विशेषज्ञ की सलाह

प्रो. बीआर कांबोज

खेत को तैयार कर फूलगोभी की दूसरी फसल लगाएं

हिसार। फूलगोभी फसल के तैयार फूलों को काट कर बाजार में भेजें। इस माह पूसा कातकी किस्म की फसल समाप्त हो जाएगी। खेत को तैयार करके फूलगोभी की दूसरी फसल लगाएं।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि अर्द्ध पछेती किस्म हिसार-1 के खेत की देखभाल करें। पहली बार पौधरोपण के लगभग 3-4 सप्ताह बाद और दोबारा में फल बनते समय। फूलगोभी की पछेती किस्म स्नोबाल-16 की पौध नर्सरी में तैयार करें। फूलगोभी की पछेती किस्म स्नोबाल-16 की पौध तैयार के लिए बीज को बोने से पहले

कैप्टान से उपचारित करें। अंकुरण के तीसरे व दसवें दिन बाद 0.2 प्रतिशत कैप्टान के घोल से नर्सरी को सिंचित करें। हानिकारक कीड़ों से रक्षा के लिए 400 मिलीलीटर मैलाथियान 50 ईसी को 200-250 लीटर पानी में घोलकर एक एकड़ खेत में छिड़कें। दवा का इस्तेमाल आवश्यकता होने पर 10 दिनों के दोबारा करें। दवा के इस्तेमाल के बाद फसल को एक सप्ताह तक खाने के काम में न लें। इन कीड़ों की रोकथाम नंदगोभी, मूली आदि में इसी प्रकार से करें। डायमंड बैक मांथ के लिए 400 ग्राम बेसिलस थुरिंगिएंसिस बायोआरम्प प्रति एकड़ खेत में छिड़कें। ब्यूरो



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

दिनांक

17.10.22

पृष्ठ संख्या

3

कॉलम

4-6

जायका: एचएयू ने गेहूं से एलर्जी से बचाव के मद्देनजर खाद्य प्रोडक्ट बनाए एचएयू ने तैयार किए ग्लूटन फ्री ज्वार और खजूर के बिस्किट, जो हीमोग्लोबिन बढ़ाने में सहायक

महबूब अली हिंसा

एचएयू के इंद्रा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय के खाद्य एवं पोषण विभाग के वैज्ञानिकों और रिसर्च स्कॉलर ने रिसर्च के बाद ग्लूटन फ्री उत्पाद तैयार किए हैं, जिन्हें गेहूं से एलर्जी वाले बच्चे, बड़े और बूढ़े खा सकते हैं। यही नहीं विशेष प्रकार की चॉकलेट बॉल्स भी तैयार की गई हैं, जिससे मोटापा बढ़ने का भी खतरा नहीं रहेगा। साथ ही, चॉकलेट मिठाई का स्वाद देगी। एचएयू के खाद्य एवं पोषण विभाग की वैज्ञानिक डॉ. उर्वशी नांदल ने बताया कि आज के समय में लोगों के अंदर गेहूं से एलर्जी की समस्या रहती है। जिसके मद्देनजर ग्लूटन फ्री यानी बेसन, जौ और ज्वार आदि से उत्पाद तैयार



किए गए हैं, जिनके सेवन से गेहूं से एलर्जी वाले लोगों को परेशानी नहीं होगी। ज्वार और खजूर के बिस्किट तैयार किए हैं, जो वजन कम करने के लिए रक्त परिसंचरण, हीमोग्लोबिन की क्षमता बढ़ाने में लाभदायक है। यह बिस्किट ग्लूटन फ्री होने के साथ साथ लैक्टोज फ्री भी है।

तैयार चॉकलेट बॉल्स मिठाई का देगी स्वाद : कनडेंसड मिल्क द्वारा एक साथ रखे गए क्रूसा किए हुए

बिस्किट, डेसीक्रेटिड नासिकल और कोको पाउडर के संयोजन से एक रोमांचक माउथ फील और अच्छा स्वाद देने वाली चॉकलेट बॉल्स तैयार की गई हैं। इसकी खास बात यह है कि इसे मिठाई की जगह भी प्रयोग में लाया जा सकता है। बेसन से तैयार किए गए बिस्किट को गेहूं की एलर्जी से पीड़ित व्यक्ति, बच्चा आराम से सेवन कर सकता है। और यह प्रोटीन से भी भरपूर है। एचएयू के वीसी प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने कई प्रोडक्ट तैयार किए हैं। लोगों को प्रोडक्ट बनाने के बारे में निराल्क जानकारी भी दी जाती है ताकि वह खुद उत्पाद बना कर ना केवल अपनी सेहत ठीक रखें अपितु स्वरोजगार स्थापित कर सकें।